की श्रेष्ठ परिभाषा निम्नांकित हो सकती है—

"अल्पविकसित अर्थव्यवस्था वह अर्थव्यवस्था है जहाँ जनसंख्या की वृद्धि की दर अपेक्षाकृत अधिक हो, पर्याप्त मात्रा में प्राकृतिक साधन उपलब्ध हों परन्तु उनका पूर्णरूपेण विदोहन न हुआ हो, लोगों का जीवन-स्तर अत्यन्त नीचा हो, जहाँ विनियोग के विस्तृत क्षेत्र हों परन्तु पूँजी निर्माण की गति अत्यन्त धीमी हो, जनता की उपभोग वृत्ति बहुत ऊँची हो जबकि बचत न्यूनाधिक शून्य हो, छिपी हुई बेरोजगारी विद्यमान हो, कृषि अत्यन्त प्राचीन ढंग से की जाती हो, उद्योग, व्यापार एवं यातायात तकनीकी दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ी हुई अवस्था में हो परन्तु फिर भी उस देश के निवासी रहन-सहन के स्तर में वृद्धि करने हेतु राष्ट्रीय साधनों का सर्वोपयुक्त ढंग से उपयोग करने में कार्यरत हों।"

अल्पविकसित अथवा अर्द्धविकसित अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ
(CHARACTERISTICS OF UNDER-DEVELOPED ECONOMY)

अल्पविकसित अर्थव्यवस्था की उपर्युक्त प्रस्तुत की गई परिभाषाओं द्वारा अल्पविकसित अर्थव्यवस्था की आधारभूत विशेषताओं का विवेचन करना एक कठिन कार्य है किन्तु इन परिभाषाओं में से कुछ लक्षणों या विशेषताओं का चुनाव किया जा सकता है। **प्रो. लिविन्स्टीन** तथा **बेंजामिन हिगिंज** ने अल्पविकसित देशों की सम्पूर्ण विशेषताओं को निम्न चार वर्गों में विभाजित किया है—

(i) आर्थिक विशेषताएँ, (ii) जनसंख्या सम्बन्धी विशेषताएँ, (iii) प्राविधिक विशेषतायें, तथा (iv) सामाजिक व राजनैतिक विशेषताएँ।

इसके विपरीत **मेयर एवं बॉल्डविन** ने अपनी पुस्तक *'Economic Development'* में अल्पविकसित अर्थव्यवस्था की निम्न आठ विशेषताओं का उल्लेख किया है—

(i) कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था, (ii) जनसंख्या में तीव्र वृद्धि अथवा जनांकिकीय विशेषताएँ, (iii) प्रति व्यक्ति आय का निम्न स्तर अथवा सामान्य दरिद्रता, (iv) अल्पशोषित प्राकृतिक साधन, (v) पूँजी निर्माण की निम्न दर, (vi) आय वितरण की विषमता, (vii) निर्यात पर निर्भरता, एवं (viii) द्वैतीयक अर्थव्यवस्था।

वैसे उपर्युक्त वर्गीकरण के आधार पर एक अल्पविकसित अर्थव्यवस्था की विशेषताओं को सामान्यतः निम्न छः भागों में बाँटा जा सकता है—

(i) आर्थिक विशेषताएँ, (ii) जनांकिकीय विशेषताएँ, (iii) तकनीकी विशेषताएँ, (iv) राजनीतिक विशेषताएँ, (v) सामाजिक विशेषताएँ, (vi) अन्य विशेषताएँ।

इन विशेषताओं का क्रमानुसार विवेचन निम्नांकित है—

1. आर्थिक विशेषताएँ (Economic Features)

(1) कृषि व्यवसाय की प्रधानता—अल्पविकसित देशों की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। इस जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग कृषि एवं उससे सम्बद्ध क्रियाओं पर आश्रित होता है। भारत, पाकिस्तान, थाइलैण्ड, इण्डोनेशिया, इक्वाडोर की 75 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, कनाडा, फ्रांस आदि विकसित देशों में कृषि से सम्बद्ध जनसंख्या का प्रतिशत अत्यधिक न्यून है; जैसे—फ्रांस में 4.1 प्रतिशत, अमेरिका में 1.7 प्रतिशत, ब्रिटेन में 2.2 प्रतिशत, कनाडा में 3.3 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, जबकि पाकिस्तान में 56 प्रतिशत, इण्डोनेशिया में 57 प्रतिशत एवं भारत में 56 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्यों से सम्बद्ध है। उल्लेखनीय है कि अल्पविकसित देशों में मछली पालन, पशुपालन, बागवानी, जंगल की कटाई एवं अन्य ऐसे ही कार्य कृषि कार्यों के अन्तर्गत सम्मिलित किये जाते हैं।

(2) सामान्य निर्धनता—प्रति व्यक्ति आय के निम्न स्तर के रूप में परिलक्षित 'सामान्य निर्धनता' अल्पविकसित अर्थव्यवस्था की आधारभूत विशेषता है। सामान्य निर्धनता के कारण अल्पविकसित देश के निवासियों का जीवन-स्तर बहुत नीचा होता है। इन देशों में लगभग 75 प्रतिशत आय भोजन पर व्यय की जाती है तथा भोजन में पोषक तत्वों का अभाव रहता

Scanned with CamScanner

है। अपर्याप्त भोजन की भाँति अल्पविकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों के निवासियों को प्राप्त वस्त्र एवं आवास व्यवस्था भी अपर्याप्त होती है। समुचित चिकित्सा सुविधाओं के अभाव में इन देशों के निवासी गन्दी बस्तियों और अस्वस्थ दशाओं में निवास करते हैं। इन देशों में शिक्षा का भी घोर अभाव रहता है।

(3) **अल्पविकसित प्राकृतिक संसाधन—प्रो. बौर और यामी** के शब्दों में, "यह कहना सर्वथा अनुचित होगा कि प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से अल्पविकसित देशों के साथ पक्षपात किया गया है अथवा इन देशों में प्राकृतिक उपहार बहुत न्यून मात्रा में उपलब्ध हैं। ईश्वर ने विश्व को विकसित और अविकसित दो भागों में नहीं बाँटा है। सभी विकसित देश अपने सतत् प्रयासों के आधार पर ही इतिहास के निकटवर्ती वर्षों में वर्तमान स्थिति को प्राप्त कर सके हैं।" उदाहरणार्थ—अफ्रीका में ताँबा, टिन, बॉक्साइट और स्वर्ण के अपार भण्डार उपलब्ध हैं। साथ ही जल-विद्युत पैदा करने की विशाल क्षमता विद्यमान है। एशिया लोहा, बॉक्साइट, मैंगनीज, अभ्रक, पेट्रोलियम और टिन के विशाल भण्डारों की दृष्टि से सम्पन्न है, जबकि लैटिन अमेरिका में लोहा, जिंक, ताँबा और पेट्रोलियम के विशाल भण्डार उपलब्ध हैं। अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका में मिलने वाली अपार वन सम्पदा का आज भी समुचित रूप से दोहन नहीं हो पा रहा है। तकनीकी ज्ञान का अभाव, पूँजी की अत्यधिक कमी, अव्यवस्थित सामाजिक संगठन, सीमित क्षेत्र वाला बाजार आदि अनेक ऐसे कारण हैं जो अल्पविकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के समुचित दोहन न होने देने के लिए उत्तरदायी हैं।

(4) **पूँजी की न्यूनता**—अल्पविकसित देशों की एक सामान्य विशेषता पूँजी की न्यूनता भी है। इसीलिए अल्पविकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों को न्यून बचत और 'न्यून विनियोग वाले देश' अथवा 'पूँजी की दृष्टि से निर्धन देश' कहा जाता है। इन देशों में पूँजी का भण्डार तो अत्यधिक न्यून मात्रा में होता ही है किन्तु साथ ही पूँजी निर्माण की दर भी बहुत नीची होती है।

सामान्यतः यह दर राष्ट्रीय आय की 5 या 10 प्रतिशत होती है। इसके विपरीत, विकसित देशों में यह सामान्यतः 20 से 35 प्रतिशत तक होती है। भारत में पूँजी निर्माण की वर्तमान दर 30.1 प्रतिशत है। अल्पविकसित देशों में पूँजी की इस अत्यधिक कमी के कारण प्राकृतिक एवं मानवीय साधनों का समुचित उपयोग नहीं हो पाता तथा कृषि एवं निर्माणकारी उद्योगों के अभाव में सदैव कठिनाई बनी रहती है। पूँजी की इस कमी का मूल कारण बचत का अत्यधिक अल्प होना है। प्रति व्यक्ति आय का स्तर अत्यधिक नीचा होने के कारण विनिर्मित वस्तुओं के लिए बाजार की माँग का क्षेत्र बहुत सीमित हो जाता है। इससे निवेश के लिए उत्साह भी शिथिल पड़ जाता है।

(5) **व्यापक आर्थिक असमानता**—अल्पविकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों में आय एवं सम्पत्ति के वितरण में बहुत अधिक असमानता पाई जाती है। इस असमानता के मूल में गरीबी, विकासदर का कम होना, कर चोरी, उत्पादन के साधनों का असमान वितरण, बेरोजगारी और अर्द्धबेरोजगारी, तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या, मुद्रा स्फीति और श्रम की निम्न उत्पादकता जैसे कारण निहित रहते हैं।

(6) **गतिशील उद्यम की अनुपस्थिति**—अल्पविकसित देशों में उद्यमी योग्यता का अभाव पाया जाता है। परम्परागत रीति रिवाज, सामाजिक ऊँच-नीच की कठोरता तथा नये आविष्कारों और खोजों के प्रति अत्यधिक अविश्वास इस देश के निवासियों को विकास के लिए मार्ग अवरुद्ध करता है। पूँजी का अभाव, निजी सम्पत्ति का न होना, बाजार का सीमित क्षेत्र, कानून एवं व्यवस्था की जर्जर स्थिति और संविदा करने की स्वतन्त्रता का अभाव आदि ऐसे कारण हैं जो अल्पविकसित देशों के उद्यमियों को हतोत्साहित करते हैं। प्रशासनिक व्यवस्था की अक्षमता के कारण अल्पविकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों में सार्वजनिक उपक्रमों का भी विशेष महत्व नहीं होता। गतिशील उद्यम के अभाव में निवेश का स्तर बहुत अधिक निम्न बना रहता है। इन देशों में जो थोड़ी बहुत उद्यमशीलता पाई जाती है उसमें एकाधिकारी या अर्द्ध-एकाधिकारी बन जाने की प्रवृत्ति अधिक होती है।

(7) **औद्योगिक पिछड़ापन**— अल्पविकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों में आधारभूत उद्योगों का घोर अभाव रहता है। इन देशों में सामान्यतः उपभोक्ता वस्तु या कृषि वस्तु बनाने वाले उद्योगों का ही विकास हो पाता है। इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय तथ्य यह है कि 75 प्रतिशत जनसंख्या वाले अल्पविकसित देश औद्योगिक उत्पादन में मात्र 20 प्रतिशत का ही योगदान दे पाते हैं, जबकि 80 प्रतिशत योगदान विकसित देशों की ओर से प्राप्त होता है। भारतीय उद्योगों द्वारा राष्ट्रीय आय में मात्र 26.4 प्रतिशत का योगदान प्राप्त होता है, जबकि जर्मनी में 38, रूस में 52, रोमानिया में 40, चीन में 48 और पौलेण्ड में 39 प्रतिशत योगदान उद्योगों की ओर से प्राप्त होता है।

(8) **प्राविधिक पिछड़ापन**—अल्पविकसित देशों में प्राविधिक पिछड़ापन की स्थिति विद्यमान रहती है। सामान्यतः इन देशों में तकनीकी दृष्टि से पिछड़ापन होने के कारण उत्पादन लागत अधिक होती है। साथ ही श्रम और पूँजी की निम्न उत्पादकता एवं अकुशल व अप्रशिक्षित श्रमिकों की भारी संख्या इस प्राविधिक पिछड़ेपन के लिए उत्तरदायी है।

Scanned with CamScanner

(9) **अल्प रोजगार व बेरोजगारी**—अल्पविकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों में अल्प रोजगार की स्थिति के साथ-साथ बेरोजगारी की भयावह स्थिति विद्यमान रहती है। इन देशों में जिन लोगों को रोजगार मिला हुआ भी होता है, वह सामान्यतः अल्प समय के लिए ही होता है, जबकि युवकों की एक बहुत बड़ी संख्या सदैव बेरोजगारी से जूझती रहती है। इन देशों की शासन व्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था अथक प्रयासों के बाद भी बेरोजगारी की इस विशाल संख्या के लिए रोजगार की व्यवस्था करने में असमर्थ रहती है। बेरोजगारी की इस भयावह स्थिति के मूल में औद्योगीकरण की कमी, पूँजी निवेश का अभाव एवं अन्य कारण निहित हैं। **गुन्नार मिर्डल** के शब्दों में, "अल्प रोजगार या अदृश्य बेरोजगारी अधिकांश अल्पविकसित देशों की उल्लेखनीय विशेषता होती है।"

(10) **बैंकिंग सुविधाओं की कमी**—अल्पविकसित देशों में बैंकिंग सुविधाएँ समुचित रूप से प्राप्त नहीं हो पातीं। ग्रामीण क्षेत्र तो सामान्यतः बैंकिंग सुविधाओं से वंचित ही रहते हैं। एक अनुमान के अनुसार विकसित देशों में कुल मुद्रा का 65 प्रतिशत भाग बैंकों के जमा खातों में पहुँचता है, जबकि अल्पविकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों में यह प्रतिशत 35 से 45 तक ही है।

(11) **द्वैतीयक अर्थव्यवस्था**—अल्पविकसित अर्थव्यवस्था वाले अधिकांश देश '**द्वैतीयक अर्थव्यवस्था**' (Dualistic Economy) से सम्बद्ध होते हैं। इन देशों में नगरीय क्षेत्रों में फैली हुई विकसित एवं संगठित अर्थव्यवस्था होती है। इन नगरीय बाजारों में आधुनिक जीवन से सम्बन्धित सभी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं; जैसे—रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, यातायात के आधुनिक साधन, बैंक, होटल, भव्य इमारतें, शासकीय कार्यालय, शिक्षा-संस्थायें, बड़े-बड़े व्यापारिक संस्थान एवं उद्योग आदि। दूसरी ओर ग्रामीण बाजार होते हैं जो असंगठित एवं पिछड़े हुए तो होते ही हैं साथ ही जिनमें मानव जीवन से सम्बन्धित सुविधाओं का भी घोर अभाव रहता है। सामान्यतः ये बाजार कृषि उन्मुख अर्थव्यवस्था वाले होते हैं।

अनेक अल्पविकसित देश विदेशी कम्पनियों की उपस्थिति के कारण तिहरी अर्थव्यवस्था वाले भी होते हैं। ये विदेशी कम्पनियाँ इन देशों में सामान्यतः चाय बागान, पेट्रोलियम, खनिज उत्खनन आदि का कार्य करती हैं। इन कम्पनियों का अल्पविकसित देशों की अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ता है क्योंकि ये कम्पनियाँ जो भी कार्य करती हैं अपने देश के हितों को ध्यान में रखकर करती हैं। परिणामस्वरूप इन विदेशी कम्पनियों द्वारा प्राप्त लाभ उनके देशों को चला जाता है और अल्पविकसित देश आर्थिक रूप से निर्धन बने रहते हैं।

(12) **विदेशी व्यापार उन्मुखता**—सामान्यतः अल्पविकसित अर्थव्यवस्था वाले देश विदेशी व्यापार की ओर उन्मुख होते हैं। उनकी यह उन्मुखता प्राथमिक उत्पादों के निर्यात तथा उपभोक्ता पदार्थों एवं मशीनरी के आयात के रूप में दृष्टिगोचर होती है। इन देशों में निर्यात हेतु जो उत्पादन किया जाता है उसका अनुपात कुल उत्पादन का मात्र 23.4 प्रतिशत होता है। कुछ अल्पविकसित देश मात्र एक या दो वस्तुओं के निर्यात द्वारा विदेशी मुद्रा का एक बड़ा भाग अर्जित कर लेते हैं। अल्पविकसित देशों की निर्यात पर अत्यधिक निर्भर रहने की प्रवृत्ति इन देशों की अर्थव्यवस्था पर निम्न घातक प्रभाव डालती है—

(i) निर्यातों के उत्पादन पर अधिक ध्यान दिए जाने के कारण अर्थव्यवस्था के दूसरे क्षेत्र उपेक्षित रह जाते हैं।

(ii) उपभोक्ता पदार्थों की घरेलू उत्पादन क्षमता की उपेक्षा होने के कारण आयात की सीमान्त प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिलता है।

(iii) प्राथमिक वस्तुओं का निर्यात करने वाले देशों की व्यापार शर्तें सामान्यतः अल्पविकसित देशों की अर्थव्यवस्था के प्रतिकूल होती हैं।

(iv) अल्पविकसित देशों की अर्थव्यवस्था निर्यात माल की अन्तर्राष्ट्रीय कीमतों में उच्चावचन की शिकार बन जाती है इससे सदैव आर्थिक संकट उपस्थित रहने का भय बना रहता है।

2. जनांकिकीय विशेषताएँ (Demographic Features)

जनसंख्या के आकार, घनत्व, आयु संरचना और जनसंख्या वृद्धि दर की दृष्टि से अल्पविकसित देशों में विविधता की स्थिति पाई जाती है किन्तु कुछ जनांकिकीय विशेषताएँ इन अल्पविकसित देशों में सामान्यतः समान रूप से पाई जाती हैं।

(1) **ऊँची जन्म-दर व नीची मृत्यु-दर**—लगभग सभी अल्पविकसित देशों में ऊँची जन्म-दर तथा ऊँची किन्तु घटती हुई मृत्यु-दर पाई जाती है। परिणामस्वरूप जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर बहुत ऊँची बनी रहती है। अल्पविकसित देशों में जन्म-दर सामान्यतः 30 से 40 प्रति हजार और मृत्यु-दर 15 से 30 प्रति हजार तक होती है, जबकि विकसित देशों में जन्म-दर व मृत्यु-दर क्रमशः 15 से 20 प्रति हजार और 9 से 10 प्रति हजार है। अल्पविकसित देशों में ऊँची जन्म-दर होने के प्रमुख कारण भाग्यवाद में विश्वास, पारिवारिक परम्पराएँ, बाल विवाह, विवाह के प्रति अनिवार्यता का दृष्टिकोण, मनोरंजन की समुचित सुविधाएँ न होना, निम्न जीवन स्तर, कम आय व निरोधक सुविधाओं का अभाव है। ऊँची किन्तु घटती हुई मृत्यु-दर के प्रमुख

Scanned with CamScanner

कारण हैं— चिकित्सा सुविधाओं का अभाव, स्त्रियों में शिक्षा के प्रति अरुचि व शिक्षा व्यवस्था का अभाव, पौष्टिक आहार की कमी एवं अकाल व महामारी आदि। भारत में वर्तमान जन्म-दर 23.1 व मृत्यु-दर 7.4 प्रति हजार है।[1] इस प्रकार तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या इन देशों की कुल जनसंख्या की प्रतिवर्ष पर्याप्त वृद्धि कर देती है। पूँजी निर्माण की नीची दर तथा प्रति व्यक्ति न्यून आय वाले इन देशों के लिए तेजी से बढ़ती अपनी जनसंख्या का भरण-पोषण करना अत्यधिक कठिन कार्य हो जाता है।

(2) **जनसंख्या की अधिकता**—अल्पविकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों में जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है जबकि विकसित देशों में यह अत्यधिक कम पाया जाता है। अल्पविकसित देशों में जनसंख्या बढ़ने की गति बहुत तीव्र होती है। अत: यहाँ जनसंख्या का आकार तो बड़ा होता ही है जनसंख्या का घनत्व भी बहुत अधिक होता है।

(3) **ग्रामीण जनसंख्या की अधिकता**—अल्पविकसित देशों में जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग गाँवों में निवास करता है। जनसंख्या के इस विशाल भाग का व्यवसाय कृषि होता है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की 72.2 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है।

(4) **निम्न जीवन प्रत्याशा**—अल्पविकसित देशों में निम्न जीवन प्रत्याशा (40 से 60 वर्ष) पाई जाती है। निम्न जीवन प्रत्याशा का अर्थ यह है कि अल्पविकसित देशों की जनसंख्या में कार्य करने वाली जनशक्ति का अनुपात बहुत कम होता है तथा शिशुओं का अनुपात अधिक होता है।

(5) **आश्रितों की अधिक संख्या**—अल्पविकसित देशों में ऊँची जन्म-दर होने के कारण कुल जनसंख्या का एक बड़ा अनुपात (लगभग 40 प्रतिशत) 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों का होता है। अर्थात् कुल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत भाग इन देशों में धन अर्जित करने योग्य नहीं होता। अत: इन देशों में आश्रितों की संख्या अधिक होती है, परिणामस्वरूप कार्यशील जनसंख्या द्वारा पूँजीगत साज-सज्जा में निवेश हेतु धन की बचत कर पाना कठिन होता है। देश की दीर्घकालीन सामाजिक-आर्थिक प्रगति के लिए शिक्षा तथा अन्य सुविधाओं की व्यवस्था कर पाना भी कठिन होता है।

(6) **कृषि भूमि की मात्रा कम**—अधिकांश अल्पविकसित देशों में कृषि भूमि के अनुपात में कृषक जनसंख्या का घनत्व बहुत ऊँचा पाया जाता है।

3. तकनीकी विशेषताएँ (Technical Features)

अल्पविकसित देशों में निम्नांकित तकनीकी विशेषताएँ पाई जाती हैं—

(1) **उत्पादन की पुरानी विधि**—अधिकांश अल्पविकसित देश आज भी उत्पादन की पुरानी विधियों का ही प्रयोग करते हैं। उदाहरणार्थ, इन देशों में कृषि व अन्य उद्योगों में उन्नत मशीनों व उपकरणों का प्रयोग नहीं किया जाता है, परिणामस्वरूप उत्पादन अधिक नहीं हो पाता है।

(2) **तकनीकी शिक्षा की कमी**—अल्पविकसित देश तकनीकी शिक्षा सुविधाओं की दृष्टि से अत्यधिक पिछड़े हुए होते हैं। इन देशों में तकनीकी बोध व अनुसंधान के लिए भी समुचित सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होतीं, साथ ही उन कार्यों के लिए धन की व्यवस्था भी बहुत कम रहती है। परिणामस्वरूप इन देशों में मिलने वाले श्रमिक तकनीकी दृष्टि से तो अशिक्षित होते ही हैं, किन्तु साथ ही इनमें श्रम की गतिशीलता का अभाव भी पाया जाता है। श्रमिकों का परम्परावादी दृष्टिकोण भी तकनीकी शिक्षा के मार्ग में एक बहुत बड़ा व्यवधान होता है।

(3) **कुशल श्रमिकों की कमी**—अल्पविकसित देशों में तकनीकी शिक्षा एवं प्रशिक्षण के अभाव के कारण कुशल श्रमिकों का भी अभाव रहता है। परिणामस्वरूप उद्योगों के लिए कुशल श्रमिक नहीं मिल पाते।

(4) **संचार एवं आवागमन की अपर्याप्त सुविधाएँ**—अल्पविकसित देशों में संचार एवं आवागमन के समुचित साधन उपलब्ध नहीं होते, परिणामस्वरूप व्यापार विकसित नहीं हो पाता और उसकी मात्रा बहुत सीमित होती है। इन देशों के श्रमिकों में गतिशीलता भी बहुत कम पाई जाती है।

4. राजनीतिक विशेषताएँ (Political Features)

अल्पविकसित देशों की राजनीतिक विशेषताएँ निम्नांकित होती हैं—

(1) **अधिकारों से अनभिज्ञ**—अल्पविकसित देशों का सामान्य जन अपने अधिकारों से अनभिज्ञ रहता है, इसी कारण उसमें अपने अधिकारों के प्रति चेतना भी नहीं पाई जाती। इन देशों की सामान्य जनता सामान्यत: भाग्य के भरोसे अपने जीवन का निर्वाह करती है।

---

1 आर्थिक समीक्षा, 2008-2009.

Scanned with CamScanner

(2) **प्रशासनिक अक्षमता**—अल्पविकसित देश प्रशासनिक क्षमताओं की दृष्टि से अक्षम होते हैं। प्रशासनिक स्तर पर ऊपर से नीचे तक ईमानदारी का घोर अभाव पाया जाता है। भ्रष्टाचार और लालफीताशाही चरम सीमा पर मिलती है। इन देशों के राजनेता भी इन बुराइयों से बुरी तरह ग्रस्त पाए जाते हैं।

(3) **आधुनिक सैन्य-व्यवस्था का अभाव**—अल्पविकसित देश आधुनिक सैन्य-व्यवस्था की दृष्टि से अक्षम होते हैं। उनकी सेना के पास आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों का घोर अभाव रहता है। परिणामस्वरूप यह देश अपनी बाह्य और आन्तरिक सुरक्षा के प्रति सदैव चिन्तित बने रहते हैं।

(4) **कमजोर राष्ट्र**—सामान्यतः अल्पविकसित देश सभी दृष्टियों से विकसित देशों की तुलना में अत्यधिक कमजोर होते हैं। अतः विकसित राष्ट्र इन अल्पविकसित देशों पर किसी न किसी रूप में अपना आधिपत्य बनाए रखने का प्रयास करते रहते हैं।

5. **सामाजिक विशेषताएँ** (Social Features)

अल्पविकसित देशों में निम्नांकित सामाजिक विशेषताएँ पाई जाती हैं—

(1) **जातिवाद का बोलबाला**—अधिकांश अल्पविकसित देश किसी न किसी रूप में जातिवाद एवं वर्गभेद की भावना से ग्रस्त हैं। जातिभेद एवं वर्गभेद ने इन देशों के सम्मुख अनेक ऐसी समस्याएँ खड़ी कर दी हैं जिनका समाधान खोज पाना असम्भव-सा लगने लगा है। ऊँच-नीच और गोरे-काले की समस्या ने इन देशों के समाज को जर्जर बना दिया है। जातिवाद और वर्गभेद ने समाज में मनुष्य को मनुष्य का शत्रु बना दिया है, परिणामस्वरूप सदैव खून-खराबे की स्थिति बनी रहती है।

(2) **साक्षरता का अभाव**—अल्प-विकसित देशों में व्यापाक पैमाने पर निरक्षरता मिलती है। अनुमान है कि इन देशों में 75 प्रतिशत लोग निरक्षर होते हैं, जबकि विकसित देशों में निरक्षरता मात्र 5 प्रतिशत लोगों में पाई जाती है। निरक्षरता इन देशों के निवासियों को भाग्य के भरोसे जीवित रहने पर विवश करती है, साथ ही रूढ़िवादी एवं अन्धविश्वासी भी बनाती है। निरक्षर लोग सामान्यतः समाज हित में किये जाने वाले प्रत्येक परिवर्तन के विरोधी भी होते हैं। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में साक्षरता का प्रतिशत वर्तमान में 64.84 है।[1]

(3) **महिलाओं की निम्न स्थिति**—अल्पविकसित देशों में महिलाओं की स्थिति सामान्यतः बहुत अच्छी नहीं होती। समाज में उन्हें सम्मानजनक स्थान भी प्राप्त नहीं होता। उन्हें कार्य करने की स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं होती। उन्हें शिक्षित बनाने की दिशा में कोई सार्थक प्रयास नहीं किए जाते। सामान्यतः उन्हें अपने उदर-पोषण के लिए पुरुषों पर निर्भर रहना पड़ता है।

(4) **रीति-रिवाजों और परम्पराओं की प्रमुखता**—अल्पविकसित देशों की सामान्य जनता वर्षों से चली आ रही परम्पराओं और रीति-रिवाजों से बँधी होती है। वह परम्पराओं और रीति-रिवाजों को अपने जीवन का अटूट अंग मानती है। वह अपना सम्पूर्ण जीवन इन्हीं परम्पराओं और रीति-रिवाजों में बँधकर व्यतीत कर देती है। परम्पराओं व रीति-रिवाजों पर पानी की भाँति पैसा बहाती है और सदैव ऋणग्रस्तता व निर्धनता में अपना जीवन व्यतीत कर देती है।

6. **अन्य विशेषताएँ** (Miscellaneous Features)

(1) **अपरिवर्तनीय व्यावसायिक ढाँचा**—अल्पविकसित देशों का व्यावसायिक ढाँचा सदैव अपरिवर्तनीय रहता है। उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता।

(2) **दुर्बल वित्तीय संगठन**—अल्पविकसित देशों में वित्तीय संगठन अत्यधिक दुर्बल होते हैं। बैंकिंग व्यवस्था अत्यधिक प्रभावहीन व ढुल-मुल होती है। मुद्रा बाजार में संगठन नहीं होता है, साथ ही शासकीय आय के साधन बहुत सीमित होते हैं। इन देशों में परोक्ष करों की भरमार होती है।

Scanned with CamScanner